Chapter-5

पंचम परिच्छेद

प्रतीक नाटक: सामाजिक अभिव्यक्ति

1. प्रतीक नाटक पर सामाजिक जीवन का प्रभाव

2. पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियाँ

(क) पाश्चात्य प्रभाव

(ख) बौद्धिकता

(ग) वैज्ञानिकता

(घ) अर्थव्यवस्था

(ङ) राजनीति

(च) यातायात

(छ) वैयक्तिकता

(ज) यौन चेतना तथा टूटती नैतिकता

(झ) मूल्य संक्रमण

प्रतीक नाटक: सामाजिक अभिव्यक्ति:-

नाटक साहित्य की विधा में चाक्षुष होने के नाते देश या समाज की ततकालीन सामाजिक व राजनैतिक स्थितियों का जायजा करता है और उसी रूप में वह दर्शकों व सामाजिकों के समक्ष प्रस्तुत भी करता है। आज का समाज जिन विसंगतियों से गुजर रहा है, वह विखराव, और नैतिक मूल्यों के विघटन की स्थिति है। प्रतीक नाटकों में समाज परम्परा, स्त्री,पुरुष, सम्बन्ध अर्थ एवं संस्कृति के प्रति व्यक्त विचारों में स्पष्ट रूप से नवीनता के दर्शन होते हैं। परम्परागत भारतीय विचारधारा में आत्मा और चेतना के विकास के लिए अहं की उपासना की गयी, इन दिनों नाटक को सामाजिक अभिव्यक्तिमें जो परिवर्तन आया वह संस्कृति दर्शन सभ्यता, भाषा, शिक्षा, कला, जाति,गोत्र विवाह, परिवार, समूह, संस्था, समिति, रूढ़ि एवं प्रथा, सम्प्रदाय, लोक विश्वास, राजनीतितथा अर्थनीतिआदि में आये परिवर्तन क कारण था। यही कारणहै, कि सामाजिक परिवर्तन के साथ ही नाट्य लेखन एवं उसके प्रस्तुतीकरण में स्वभावत: अन्तर आने लगा, नाट्य सृजन का मूल प्रेरणा स्थल मानव समाजहोता है, वह समाजगत स्थितियों से अनुप्राणित हो नाट्यसृजन की ओर उन्मुख होता है।सामाजिक जीवन में घटित होने वाले विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलाप वेशभूषा, भाषा आद के आधार पर नाटक कार अपनी रचनाओं में कथानक पात्र, संवाद, रस, अभिनय, आदि नाटकीय तत्वों का समावेश करता है।

1. प्रतीक नाटक पर सामाजिक जीवन का प्रभाव:-

नाटक मूलत: सामाजिक परिस्थितियों की अनुकृति है सामाजिक आदर्श नियम, जीवन मूल्य रीति संस्कृति एवं सभ्यता आदि के अनुरूप हो नाट्यसृजन होता है विभिन्न -

सामाजिकों के आचार विचार एवं रूढ़ियों में अन्तर होता है, प्राचीन काल से हीनाटक का मूल प्रेरणास्रोत मुख्यतया धर्म रहा है, धार्मिक अनुष्ठानों को नियमित करते हुए नाटक का उदभव हुआ धार्मिक रूढ़ियों परम्पराओं तथा विभिन्न धार्मिक विचारों में नाटक के स्वरूप निर्माण को उन्नत एवं आदर्श बनाने हेतु सामाजिक विधियों का उल्लंघन नहीं हुआ। साथ ही साथ आध्यात्मिकता को भी महत्त्व दिया गया । राम लीला, रासलीला, कीर्तनिया, अंकिया, जात्रा, गम्भीरा, भवाई, भगत, ललित, यक्षगान, गोंधल, दशावतार, विधिनाटकम, भाइ जश्न, नौटंकी आदि लोक नाटकों का योगदान धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकासों के प्रति सामाजिकों को आस्थावान बनाये रखना था, परिणामस्वरूप नाटकों के माध्यम से धार्मिक भावना का प्रदर्शन होता रहा, और इस कालमें लिखे जा रहे नाटकों में किसी न किसी रूप में धार्मिक जीवन की अभिव्यक्ति होती रही और यही कारण है कि हिन्दी के अधिकांश नाटक मूलतः धार्मिक, पौराणिक, आख्यानों पर आधारित हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य सामाजिक व्यवस्था के प्रभाव से प्रभावित होकर समकालीन नाटककारों ने अपनी कृतियों में प्राचीन व्यवस्था के प्रति विद्रोह व्यक्त किया, इन नाटककारों ने वर्णभेद जाति प्रथा जैसे सामाजिक दूषणों का विरोध किया । आधुनिक सामाजिक मूल्यों आदर्शों प्रथाओं और विश्वासों आचार व्यवहारों आदि में परिवर्तन आने के कारण संयुक्त परिवार टूटने लगा । आज पति-पत्नी अपना अपना कार्य करते हुए स्वतन्त्रता चाहते हैं, वे किसी भी नियन्त्रण को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं । अन्तर्जातीय विवाहों ने तो पारिवारिक विघटनमें महत्त्वपूर्ण भूमिकायें अदा की हैं । नवीन शिक्षा स्वतन्त्रता, अधिकारभावना, और बुद्धिवाद, ने तो इस ह्रासोन्मुखता में अत्यधिक योग दिया है । वर्तमान युगीन पूंजीवादी व्यवस्था में बेरोजगारी, निर्धनता, वर्गसंघर्ष, तथा शोषण

---155

की मनोवृत्ति ने सामाजिक व्यवस्था को कलुंकित कर दिया है। विवाह से पूर्व यौनसम्बन्ध अवैध प्रेम, अन्तर्जातीय विवाह, वैधानिक विवाह, अनमेलविवाह, अवैध सन्तान, आदि ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को झकझोर दिया है गतिशील समाज में ही उसके विघटनके तत्त्व मौजूद होते है और वे ही तत्त्व जो सामाजिक संरचना को गतिशील बनाते है सामाजिक विघटन को भी उत्पन्न करने वाले होते हैं। सामाजिक विघटन उस समय उत्पन्न होता है, जब सन्तुलन स्थापित करने वाली शक्तियों में परिवर्तन होता है, तब सामाजिक संरचना इस प्रकार हटने लगती है कि पूर्व स्थापित आदर्श नवीनपरिस्थितियों पर लागू नहीं होते। और सामाजिक नियंत्रण के स्वीकृत रूपों का प्रभाव पूर्वक ही कार्यान्वयन असम्भव हो जाता है। टूटते परिवार अनैतिक वातावरण पारिवारिक कलह मानसिक अशान्ति, वर्गसंघर्ष जातीय भेद राजनैतिक द्वन्द्व धार्मिक द्वेष, प्रान्तीयतातथा भाषा भेद आदि नेसामाजिक व्यवस्था को विसंगत बना दिया है।

प्राचीन कालमें जहाँ नारी की स्थितिअत्यन्त दयनीय थी, वहीं पर उसकी दशा सुधारने केलिए राजा राममोहन राय, स्वामीदयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी, आदि महान विभूतियों के साथ नारी ने स्वयं सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति पानेकेलिए संघर्ष किया परिणामस्वरूप समकालीन युग तक पहुँचते पहुँचते नारियों ने समाज में अपनीउच्च और सुदृढ़ स्थितिबना ली, समकालीन नाटककारों ने स्वच्छंद प्रेम और प्राचीन सामाजिक विघटन के प्रति नारीमें अंकुरित विद्रोह का चित्रण अपनी नाट्य कृतियों में किया। साथ ही साथ नारी को उचित सम्मान प्रदान कराने का भी अथक प्रयास किया।

2. पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियाँ:-

समकालीन युग में समाज अर्थ, राजनीति

धर्म के क्षेत्र में होने वाली उथल पुथल विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन के फलस्वरूप आज जीवन पद्धति से लेकर सोचने विचारने के मुद्दे, और ढंग में पर्याप्त परिवर्तन आया है। भौतिक जीवनके प्रति अत्यधिक झुकाव ने आज के मनुष्य को दिशाहीन कर दिया है। आध्यात्मिकता के स्थान पर आज भौतिकता का बोल-बाला है। आजकी शिक्षित युवापीढ़ी समाज की प्रगति में बाधक प्रथाओं और रूढ़ आचारों पर खुलकर प्रहार कर रही है। अब पुरुष वर्ग द्वारा उपेक्षित नारीजागृति की नई लहर के कारण घर की चहर दीवारी से बाहर निकलकर सड़क पर आ गयी है और वह पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगेबढ़ रही है, अब वह पुरुषों की दया पर पलने वाला और उसके इशारों पर नाचने वालीस्पन्दन हीन कठपुतली मात्र नहीं रह गयी, बल्कि समाज में वह पुरुषों से भीआगे बढ़ रही है। समसामयिक नाटकों में विवाह केपूर्व प्रेम और सैक्स का खुला चित्रण विवाहित स्त्री पुरुषों का अन्य स्त्री पुरुषों से यौन सम्बन्ध, तथा विधुर विधवा और परित्यक्ता नारियों में स्वतच्छंद कामकी प्रवृत्ति खुलकर व्यक्त हुई है असंयमित यौन तृष्णा के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव, विघटन, और नैतिकमर्यादा में भारी गिरावटआयी है। उक्त सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जब हम समकालीननाटकों का विवेचन करते हैं तो नैतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों मेंहोने वाले परिवर्तनों का समकालीन हिन्दी नाट्य साहित्य पर गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली ये प्रवृत्तियाँ निम्न है :-

क- पाश्चात्य प्रभाव :-

पाश्चात्य सभ्यता और पश्चिमी ज्ञान विज्ञान की चकाचौंध से स्तंभित नाटककारों ने परम्परागत नाट्यादर्शों को पुराना समझकर नवीन नाट्य प्राणियाँ और आदर्शों कोसृष्टिकी, वे जीवन को समग्र

और यथार्थ रूप में देखे जाने कीबात करने लगे । पश्चिमी वादों के आधार पर जीवन की वैज्ञानिक बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, व्याख्या, विदेश शब्द कोष, की सहायता से करने लगे । फलतः भरत मुनि के स्थान पर इब्सन और शॉ उनके नाट्य गुरू बनगये। डर्विन के विकास वाद बेन्थम और मिलके उपयोगिता वाद, इब्सन औरशॉ के बुद्धि वाद, कार्ल मार्क्स और लेनिन कासाम्यवाद, टालस्टाय और रस्किन के शान्ति और अहिंसा फ्रायड एडलर और युग के काम एवं मनोविश्लेषण सम्बन्धी सिद्धान्तों का भी हिन्दीनाटकों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा । अंग्रेजी शासन के दरम्यान सेक्सपियर की नाट्यशैली का व्यंग्य नाट्य पर प्रभाव पड़ा और बंग नाटकों के ही माध्यमसे हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ा समकालीन नाटकों में पाश्चात्य प्रभाव विभिन्न रूपोंमें देखने में मिलता है। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होने के कारण अब चरित्र मर्यादा आदर्श जैसा कुछ भी नहींरहा। पाश्चात्य का आधुनिकरण कर रही आधुनिक नारियाँ एक से अधिक पुरूषों के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना अपनी स्वतन्त्रता का लक्षणमान बैठीहै । तिलचट्टा की केसी, आधे-अधूरे की सावित्री, देवयानी का कहना है, कि देवयानी नरभेद कीबेटी आदि ऐसी नारियाँहै, ।

पाश्चात्य शिक्षा एवं वैज्ञानिक बोध के पैठने से आज का व्यक्ति उससे अछूता नहीं रहा उसमें चिन्तन की भावना बढ़ी, वह स्वाभिमानीऔर स्वअस्तित्व परक होने लगा । आज का व्यक्ति ज्यों ज्यों स्वपरक अहं वादी होता जा रहाहै, त्यों त्यों वह समाज से कटता जा रहा है। स्वअस्तित्व बोध काज्ञान आज नारी वर्ग औरनिम्न वर्ग को विशेषतः हुआ है शिक्षा व आत्मनिर्भरता ने नारी को नई मानसिकता प्रदान की है । वह अपने अस्तित्व बोध को पहचानकर नईदिशाकी ओर अग्रसर हो रहीहै। अपने व्यक्तित्वके

---158

नये आयामों खोज रही है । "बिना दीवारों के घर" की नायिका शोभा मैट्रिक पास उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रिंसिपल बन जाने के पश्चात अपने आत्म विश्वाससे साक्षात्कार कर अपनी शक्ति को पहचान लेती है । 3. लहरों के राजहंस में अस्तित्व की रक्षा हेतु नन्द का सुन्दरी व बुद्ध के प्रति मूल विद्रोह आज के व्यक्ति का भौतिकता व आध्यात्मिकता के प्रति विद्रोह को व्यक्त करता है । स्वअस्तित्व की भावना से प्रेरित देवयानी का कहना है कि नायिका देवयानी अपने पति से कहती है, "साधन अपनी इच्छा के अनुसार अपनी बीबी को पैर की जूता वगैरह समझता था, तो गैंडा या गया से कोई लड़का ले आते मैंने जो भी किया है, ठीक किया है । कोई भी गल्ती नहीं का है । 4. यहाँ तक कि देवयानी अपने पति को त्यागने तक को तैयार हो जाती है । देवयानी और साधन में स्वअस्तित्व बोध का संघर्ष सशक्त रूप से उभरता है । स्वअस्तित्व बोध केवल नगरों में बसने वाली नारी तक ही सीमित नहीं है, अपितु इसका असर गाँव तक भी पहुँचता है । "कजरी बन" का नायक कजरी पति द्वारा परित्यक्त होने पर धैर्य व साहस से गाँव की औरतों के व्यंग्य बाण सुनती है और जब उसका पति आता है तो स्वाभिमान जाग उठता है । उसे किसीभी प्रकार अपने पति से संवेदना या सहानुभूति नहीं है, अपितु वह उसे धिक्कारता हुई कहती है " छिनार औरतों की बातों में आकर तुम मुझे सजा देगा । झगड़ा शक्ति डरपोक ईमानदार एक झूँठी बेरहम कामचोर अपने मर्दों और बच्चों से नफरत करने वाली उनकी बातों पर मेरा पति बिश्वास करे, और मुझ पर शक --- तेरे अन्याय से पहले मैं कर लूंगी न्याय । {पत्थर का बाँक की धार तेज करने लगती है । प्यार किया है ---कोई धास नहीं पाता है, तू नहीं रहेगा तो क्या फर्क पड़ेगा । 5. कजरी गाँव वालों की उपस्थित होने से पति के प्रति घृणा का भाव उभर आता है ।

पाश्चात्य सभ्यता से रंगी समकालीन नारी प्राचीन मूल्यों को बड़ी निर्दयता से नकार देती है । "दरिन्दे की नायिका रति कहती है" तुम एक कुलवधू हो सकती हो, मैं उन स्त्रियों में नहीं हूं जो अपनी शरीर को फीडिंग बाटल बना देती हूं । 6. सुनो सैफाली" कि हरिजन युवती से काली उच्च वर्ग के बकुल व अपने पिता के सामने अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए झुकना स्वीकार नहीं करती । वह विवाह पूर्व ही बकुल से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेती है । पर उससे विवाह करने से इन्कार कर देती है । क्योंकि बकुल का पिता निम्नवर्गीय सैफाली की आड़ में चुनाव जीतना चाहता है, वाह रे इन्सान" का पात्र शान्ति अपने अधिकारों के प्रति सजग है वह कहता है, कि इन इमारतों के मालिक हमेशा के लिए जुल्म नहीं ढाल सकते हम पर । 7. क्रान्ति की पत्नी तुलसी अपने मालिक सम्पत राम का अनुचित बात कहने पर विरोध करती है वह अपना इज्जत व अस्तित्व के प्रति सजग है ।

आज की युवा पीढ़ी अपने अधिकारों की सुरक्षा हेतु माता-पिता, भाई-बहन तथा समाज के प्रति विद्रोह कर रहा है ।

" तीसरा हाथी में रोशन अपने पिता को सम्बोधित करते हुए कहता है "आपको कोई अधिकार नहीं कि मेरे बीच में आकर टहलता है । एक ही जरा सी बात है कि मैं अपनी पसन्द से शादी करना चाहता हूं । मैं जहां रहता हूं वहां कोई मुझसे प्यार करती है, यह मत समझिये कि आपसे कुछ पूछ रहा हूं तो आपके आशीर्वाद से ही जीवन भोगूंगा । 8. आज की युवा पीढ़ी इतनी स्वतन्त्र प्रिय हो गयी है, कि उसे घर जेल के समान लगता है, और माता पिता तानाशाही शासक की तरह प्रतीत होते हैं । " सादर आपको" में रेखा अपनी मां से कहती है, कि मैं चाहे जाऊं कुछ भी करूं किसी से भी मिलूं तुमसे मतलब कौन होती हो,

9. स्वअस्तित्व बोध से युक्त जहाँ आज की नारी स्व्र युक्त होकर नये चिन्तन से देश और समाज को उन्नति की ओर अग्रसर कर रही है, आज का व्यक्ति प्राचीन रूढ़ियों व अन्ध विश्वासों तथा प्राचीन स्थापनाओं को त्याग कर जीवनभर धोने से इन्कार कर रहा है ।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण समकालीन नाटकों में स्वच्छंद यौन प्रवृत्ति तथा उन्मुक्त प्रेम को बढ़ावा मिला है जिसके कारण जातीयता की अवधारणाओं पर भी प्रश्न चिन्ह लग गया है ।

§ख§ बौद्धिकता:-

मानवीय सम्बन्धों की अर्थहीनता, तनाव, अधूरेपन, तथा जीवन की क्रूरता के साथ साथ बौद्धिकता की अभिव्यक्ति ही समकालीन नाटकों बौद्धिक नाटकों की श्रेणी में खड़ा कर रखी है, बुद्धिवादी समाज में प्रेम एवं यौन के न्यूरेटिक रूप के प्रचलन के कारण विवाह को एक विवशता और फैशन के रूप में देखा जाने लगा है । समकालीन वैज्ञानिक दृष्टि में प्रेम और यौन को पाप और पुण्य की अनुचित उचित धारा से मुक्ति दिलाती है । तोता-मैना, कर्फ्यू , व्यक्तिगत, मगुन पक्षी देवयानी का कहना है, द्रौपदी, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नरमेद चार यारो की यार, दुलारी बाई, सादर आपका, आधे-अधूरे, बामाचार, बरौंदा तीसरा हाथी, आदि नाटकों के पात्र बौद्धिकता से युक्त हैं । जिनमें नारी स्वातन्त्र्य को बल मिला है । सुनोशेफाली की हरिजन जूती शेफाली अस्तित्व की भक्त भावना से युक्त है इसी प्रकार वाह रे इन्सान की नौकरानी तुलसी अपने अत्याचारों अत्याचारी मालिक को चुनौती देता है, पीलीदोपहर का प्रो. सुधांशु अपनी पत्नी के निधन के पश्चात नर्स कान्ता से विवाह न करके आदर्श चेतना का परिचय देता है । इसी प्रकार भूमि की ओर, एक चीख

अन्धेरे की, आदि नाटकों में आदर्श चेतना को स्वीकारा गया है ।

इन नाटकों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा भौतिकता के प्रभाव में पारिवारिक सामाजिक मूल्यों तथा विवाह जैसे सम्बन्धों पर प्रश्नचिन्ह लगाया है । इन तथ्यों पर आधारित देवयानी का कहना है, कि वामाचार तीसरा हाथी, कर्फ्यू, तेंदुआ, मरजीवा, दरिन्दे, उत्तर उर्वशी, घरौंदा द्रौपदी, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, ठहरा हुआ पानी, एक और अजनबी, व्गर, टूटते परिवेश, आधे अधूरे सूनी सेफाली आदि नाटक है, इन नाटकों के पात्र वैयक्तिता के आधार पर परम्परागत मूल्यों को नकारते हैं । देवयानी का कहना है, कि देवयानी बोल्डनेस का परिचय देती हुई स्वच्छन्दता के आधार पर सामाजिक मान्यताओं पर तथा बिवाह पर प्रश्नचिन्ह लगाती है । तीसरा हाथी में पिता की तानाशाही में दबे छुटे पिता की मृत्यु का इन्तजार करते हैं, इस प्रकार के पितृत्व स्नेह आदरभाव, जैसे मूल्यों को नकारते हैं । "द्रौपदी का जगमोहन टुकड़ों में बंटा मुखौटे लगाये हुए है तथा अपने असन्तुष्ट व्यक्तित्व के लिए नित नई लड़की बदलता है । इसी प्रकार सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण की शिलवती शारीरिक सुख के आधार पर नपुंसक पति व वैवाहिक जीवन की मर्यादा को त्याग देती है वह मातृत्व नारी के लिए चरम मूल्य मानने वाली विचारधारा को चुनौती देती है कर्फ्यू के पात्र गौतम, कविता संजय, मनीषा, आज सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को वैयक्तिता के कटघरे में खड़ा करते हैं ।

भौतिकता से प्रभावित उत्तर उर्वशी के पात्र मोना तथा प्रकाशक, लेखक परम्परागत मूल्यों तथा आदर्श को नकारते हैं वहीं दरिन्दे की नारी पात्र रति भी विवाह, पवित्रता, सतीत्व आदि मूल्यों पर प्रश्नचिन्हलगाती

है ।

उपेक्षा के भाव से आक्रोशित, टगर की नायिका, टगर पुरूष जाति से बदला लेने के लिए सामाजिक मूल्यों को अस्वीकार करती है । "सादर आपका, में लज्जावती, भौतिक चेतना से प्रभावित होकर सामाजिक तथा नैतिक मल्यों को तोड़ती है । आधे-अधूरे की सावित्री घर व पति के वातावरण से असन्तुष्ट होकर पूर्ण पुरूष की तलाश में भटकती है, अशोक बिन्नी तथा छोटी लड़की किन्नी सभी अपने अपने दायरे में घुट रहे हैं । कारण सवर्ण बकुल के साथ विवाह करने से इन्कार कर देती है ।

"अपनी पहचान" में उत्तम व अपर्णा अपने अपने दायरें में सिमटे हुए ऐसे ही पात्र हैं, जिनका परिवार उनके अहं भाव की चोट से टूट जाता है । सम्बन्ध जड़ हो जाते हैं । नाटक का अन्य पात्र डा. घंटक, उत्तम से कहता है " उसने तो सिर्फ इतना बताया कि दो अहं वादी व्यक्तित्व आपस में टकरा गये और टक्कर में दोनों घायल हो गये ।

पारिवारिक चेतना से जुड़ी देवयानी प्राचीन मान्यताओं व संस्कारों को नकारती है, भारतीय विवाह प्रणाली की नई व्याख्या प्रस्तुत करते हुए वह कहती है, कि " शादी केवल एक पास है, जिसको हाथ में रखने से खुले आम घूमने एक साथ बिस्तर में सोने और दुर्घटना के समय सामाजिक विरोध न होने का सर्टीफिकेट मिल जाता है । ।1. सुनो शेफाली की नायिका शेफाली उच्चवर्गीय बकुल से विवाह नहीं करती, क्योंकि वह उसकी दयादृष्टि पर जीना नहीं चाहती । " मुझ पर रहम खाकर कोई मुझसे शादी करे, नहीं चाहिए मुझे ऐसी शादी" ।2. आधुनिक शिक्षिता नारी आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होकर अपनी मालिक स्वयं बनना चाहती है । अब वह केवल पिता पति या पुत्र के संरक्षण में नहीं अपितु स्वतन्त्र रहने की इच्छा करती है । आज उसे अपने कैरियर के समक्ष पवित्रता, मर्यादा, पातिव्रत्य जैसे मूल्य गौड़ नजर

आते हैं । सादर आपका की लज्जावती पोस्ट व हैसियत की दौड़ में पति से आगे निकलकर अपनेअहम भाव के कारण पारिवारिक सम्बन्धों को नकारती है, वैवाहिक मर्यादाओं को धूमिल करती है वह महत्वाकांक्षी तथा अहं भावों से मुक्त नारी है जो पद पाने की इच्छा से अन्य अनेक पुरूषों के सम्पर्क में आकर शारीरिक सम्पर्क स्थापित करती है वह पति की अवहेलना करती हुई नैतिक मूल्यों, आदर्शों तथा शील को व्यर्थ का बन्धन समझती है । 13. व्गर की नायिका व्गर पति द्वारा आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाये जाने पर समस्त पुरूष जाति से बदला लेने पर उतारू हो जाती है । सोचा था पुरूष जाति से बदला लूंगी उसने मुझे एक बार छोड़ा है, मैं बार बार पुरूषों को छोड़ूंगी । 14. इस प्रकार बौद्धिकता के आधार पर नारी स्वयं अपना मार्ग चुन रही है ।

सम-सामयिक नाटक काम और अर्थ को मुख्य आधार बनाकर लिखे जा रहे हैं । तेंदुआ, देवयानी का कहना है, कि सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, तीसरा हाथी, चिचचट्टा, उत्तर उर्वशी, शवयात्रा सम्भवामि युगे-युगे, भस्मासुर एक और द्रोणाचार्य, द्रौपदी, नरेंद तिलचट्टा, मरजीवा आदि अनेक नाटक इसी विचारधारा पर आधारित हैं ।

पाश्चात्य शिक्षा विज्ञान औद्योगिक विकास आदि के बदले बढ़ने से बौद्धिकता का समावेश बढा । आज का नाटककार भी नये चिन्तन व नवीन दृष्टिकोणों से सम्पृक्त हो गया । इस तीव्रतर होती बौद्धिकता ने व्यक्ति के मन में संस्कारों, परम्परागत मान्यताओं तथा मूल्यों के प्रति नकारात्मकता के बीज बोये । उसकी अनुभूतियों व संवेदना को प्रभावित किया । साथ ही राजनैतिक आर्थिक, तथा नैतिक प्रतिमानों पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगा दिया । सन् 60 के पूर्व के हिन्दी नाटकों में बदलती बौद्धिक चेतना का इतनाअधिक

चित्रण नहीं हुआ है जितना आलोच्य कालीन नाटकों में परिलक्षित होता है। देवयानी का कहना है, कि देवयनी अपनी पहचान की अर्पणा त्यार की त्यार, कुत्ते की नायिका आभा, तीसरा हाथी की विभा और सोहन "वाह रे इन्सान" कान्ति, व तुलसी बौद्धिकता से प्रेरित पात्र है। आधे-अधूरे की सावित्री बौद्धिकता से सम्पन्न है वह अपने आत्म विश्वास को खो चुके लिज लिजे पति से असन्तुष्ट होकर पूर्ण पुरुष की तलाश में भटकती हुई सामाजिक मर्यादाओं को नकारती है और अन्य अनेक पुरुषों से सम्बन्ध स्थापित करती है। बिना दीवारों के घर की नायिका शोभा शिक्षित तथा आत्म निर्भर होकर स्वअस्तित्त्व की भावना से प्रेरित घर हो घर को त्याग देती है इसी नाटक में अन्य नारी पात्र मीना पति की अपेक्षा स्वाभिमान, को अधिक महत्त्व देती है वह अन्य नारी की ओर आकर्षित जयन्त को तलाक देकर समाज सेवा के कार्यों की ओर उन्मुख हो जाती है। घरौंदा नाटक का सुदीप बौद्धिकता से प्रेरित हो उच्च वर्ग के साथ टक्कर लेता है।

समकालीन परिस्थितियों सम्वैधानिक तथा राजनैतिक प्रवृत्तियों को निम्न वर्ग को चेतनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सदियों से उपेक्षित इस वर्ग को उन्नति शील बनाने का प्रयास किया है, "मजदूर यूनियन, मजदूर संघ, दलित शोषित संघर्ष समाज, समिति जैसी संस्थायें, बनने से इस वर्ग में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आयी है।

रमेश मेहता कृत वाह रे इंसान के निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र शान्ति और तुलसी पूँजी पति सम्पत राम के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं "सुनो सेफाली की नायिका, हरिजन जूती, सेफाली स्व-अस्तित्व बोध के ... ।

§ग§ वैज्ञानिकता :-

समकालीन युग के नाटकों में वैज्ञानिक बोध के कारण एक नई क्रान्ति आयी । आज का युग यन्त्रिक युग है, एक मशीनी युग है, जिसमें धर्मनीति, मर्यादा रूढि संस्कार जैसी परम्पराओं का उन्मूलन हुआ है, औद्योगीकरण के टूटे हताश, भयावह, परिस्थिति में मानव मूल्यों को दफनाया जा रहा है । औद्योगीकरण को लेकर लिखे गये नाटकों में मानव परिवेश की विशाक्तता, घुटन, सत्रांस, सम्बन्धों के अर्थहीन अहसास, सामाजिक विघटन तथा मोहभंग की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है इन नाटकों में कस्बे नगर से लेकर महानगर तक की पीड़ा साकार हो उठी है, विपिन कुमारअग्रवाल ने लोटन नाटक में रोजाना की जिन्दगी से घटित सत्रांस के बीच घिरे आदमी की हालत और परेशानियों को अभिव्यक्त किया है, डा॰ लाल का करर्फ्यू और सन्तोष नारायण नौटियाल रचित एक मशीन जवानी की, नाटक वर्तमान शहरी जीवन के बीच खण्डित रिश्तों की बेचैनी व्यक्ति के अलगाव एवं मूल्यों की दिशाहीनता को अभिव्यक्ति देती है । विकल्प नाटक में राजकुमार भ्रमर ने उस औद्योगिक विघटन की तस्वीर उतारी है जिसमें राष्ट्र के हजारों युवक युवती वृद्ध, बालक, सन्देह पूर्ण जिन्दगी गुजार रहे हैं । बलराज पन्डित, का पांचवा सवार आधुनिक समय बोध के निकष पर - मशीनी मूल्यों के बदलाव फैली सामाजिक अनास्था एवं इनसे सामंजस्य न स्थापित कर पाने वाली मानव प्रवृत्ति पर चोट करता है, डा॰ लाल कृत रक्त कमल, समकालीन समस्याओं पर आधारित नाटक है, इसमें समाज में फैलने वाले अनाचार आर्थिक शोषण, तथा संकीर्ण स्वार्थवृत्ति को लेकर निम्न मध्यम वर्ग की विवशता प्रतिबिम्बित की गयी है राजकुमार ने सही रास्ता मेंआर्थिक असन्तुलन एवं तज्जन्य परिवेश की अभिव्यक्ति की है ।

तथा दिखलाया है कि वैज्ञानिकता के कारणजिन्दगी में क्षोभ, कुंठा, त्रास, घुटन, यन्त्रणा, मरण, जैसी हीन विकृतियाँ जन्म ले रही है। वैज्ञानिक बोध के कारण "कुत्ते की नायिका" आभा और राका में दफ्तरों में काम करना पड़ता है, जो दफ्तरों में काम करके अपनी कमाई से पूरे परिवार का बोझ ढो रही है। दफ्तर के अधिकारीगण काम लोलुप कुत्तों के प्रतीक हैं, जो इस नाटक का शीर्षक है। स्त्री पुरुष के सम्बन्धों को लेकर लिखा गया नाटक, मादा कैक्टस, जितना आधुनिक है, उतना वैज्ञानिक भी, अपने ढंग के इस अनोखे नाटक में वनस्पतिशास्त्र की प्रकृतिया के आधार पर स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को लेकर रचनाकार ने एक नई खोज प्रस्तुत की है। जो वैधानिक है और विचारणीय भी।

(घ) राजनीति:-

समकालीन नाटकों में राजनैतिक लक्ष्य हीनता से उत्पन्न गणतन्त्रीय अनास्था का जीता जागता चित्रण हुआ है। स्वतन्त्रता के बाद देश ने क्या खोया और क्या पाया इस स्थिति का विश्लेषण समकालीननाटककारों ने किया है। हबीब तनवीर ने आगरा बाजार में भ्रष्ट शासन व्यवस्था का पोल खोला है। शरद ज्योतिषी के नाटक एक था गदहा उर्फ अलादाद खाँ एवं अन्धों के हाथी नाटक में हमारी अनुशासहीनता और अनियमितता तथा निरंकुशता तथा शोषण के रोग से पीड़ित है ज्ञानदेव अग्निहोत्री के शुतुरमुर्ग नाटक में शुतुरनगरी का राजा सत्यमेव जयते के झूठे नारे द्वारा जनहित को लक्ष्य कर शुतुर प्रतिमा का निर्माण करता है। मणि मधुकर ने रस गन्धर्व में लाया है, कि कुर्सी के लोभ ने देश सेवा के नाम पर कथनी और करनी का आकाश पाताल करने वाले राष्टीय नेताओं के चरित्र को इस कदर नीचे गिरा दिया है कि वे जनसमस्याओं से कोसों दूर रहते हैं, डा० लाल के नाटक, पुराण एवं इतिहास का आश्रय लेकर समसामयिक युक्ति राजनीति का प्रतीकात्मक

---167

चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनके प्रत्येक नाटक प्राचीन भ्रष्ट राजनीति पंगु न्याय व्यवस्था और अवसर वादी नीति का सत्य उजागर करते हैं। गिरिराज किशोर का नाटक "मैं प्रजा हूं, मुझे प्रजा ही रहने दो, नाटक में द्रौपदी, क्रान्ति का प्रतीक है, रानी बन्ना उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण है। पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में राजनीति की गहरी घुसपैठ में नाटक को दिशाहीन कर दिया है। इन नाटकों के पात्र अपने को त्रस्त पाकर कुछ न कर पाने की स्थिति में तनावग्रस्त तथा कुंठित है। जिनकी स्थिति आक्रोश तथा झुंझलाहट की है, इन नाटकों में ब्रजमोहन शाह का त्रिशंकु जि-जे हरिजीत का सम्भवामि युगे-युगे मणिमधुकर का खेलापोलमपुर रस गन्धर्व, डा. लाल का मि. अभिमन्यु, राम गोपाल का एक और अभिमन्यु, शंकर शेष का एक और द्रोणाचार्य, ललित मोहन थापयाल की हत्या एक आकार की रेवती शरण शर्मा की राजा बलि की कथा, दया प्रकाश सिन्हा की कथा एक कंस की, विपिन कुमार अग्रवाल का लोटन, गिरिराजकिशोर का प्रजा ही रहने दो, डा० लाल की राम की लड़ाई, रमेश मेहता की खण्डित यात्रायें, मुद्राराक्षस का मरजीवा, अस्थानन्द सदासिंह का तु-तु सुशील कुमार सिंह का आज नहीं तो कल, रेवती शरण शर्मा का वाह रे इन्सान, गिरिराज किशोर का पांचवा सवार, सर्वेश्वर का बकरी, सुशील कुमार सिंह का सिंहासन खाली है, अभिमन्यु अनन्त सबनम का विरोधी अमृत राय का चिड़ियों की झालर, विष्णु प्रभाकर का टूटते परिवेश, आदि इसी कोटि के नाटक हैं। इन नाटकों में इसी प्रकार की दबती घुटती तथा झिझकती हालत दृष्टिगोचर होती है। त्रिशंकु नाटक की पात्र युवक समाज और व्यवस्था द्वारा ठुकराया कुछ न कर पाने के एहसास से विक्षिप्त क्रान्ति लाना चाहता है पर उस मार्ग से अज्ञात इसी प्रकार मि. अभिमन्यु का राजन व्यवस्था के षडयन्त्र तथा भ्रष्टाचार को जानकर निकलने को आतुर होता हुआ भी निकल नहीं पाता। " सम्भवामि युगे-युगे के पात्र जनता के प्रतीक नागरिक एक, दो, तीन राजनैतिक चेतना से सम्पन्न,

मंजे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। परन्तु जन समर्थन के अभाव में विद्रोह करने में असमर्थ है आज नहीं तो कल, के युवक युवती तथा पुरूष पात्र देश की अव्यवस्था नेताशाही, के प्रति आक्रोशित तथा विद्रोही हैं। दूसरी परिवेश का विवेक वातावरण से कुंठित होकर ईमानदारी चरित्र आदर्श, जैसे नैतिक मूल्यों की अवहेलना करता है चरित्र को अपने मार्ग के विकास में बाधा पाता है। कथा एक कंस की, का कंस भावुक हृदय होता है, जो भ्रष्ट राजनीति के परिवेश में आकर हृदय हीन और क्रूर बन जाता है, एक और द्रोणाचार्य, का अरविन्द भी अव्यवस्था का शिकार हुआ दिशाहीन कुंठित तनावग्रस्त हो जाता है, "प्रजा ही रहने दो", की प्रजा की प्रतीक द्रौपदी अपनी मुक्ति की प्रार्थना करती है, "रस गन्धर्व" के कैदी पात्र अ ब स द देश की अव्यवस्था व भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करते हैं। "बकरी" में भी युवक के माध्यम से राजनीति के हथकन्डों का पर्दाफाश किया गया है, इसी प्रकार शुतुर्मुर्ग जनता का सेवक भस्मासुर, एक गधा था, उर्फ अलादाद खाँ आदि नाटकों में राजनीति के षडयन्त्रों का प्रामाणिक दस्तावेज है जो व्यंग्य के और आक्रोश के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करते हैं। इन नाटकों की विशेषता है कि यदि इनमें पात्र आदर्श रहना चाहता परन्तु विकट परिस्थितियाँ उन्हें अपने कर्त्तव्य और आदर्श पर स्थिर नहीं रहने देती, समकालीन नाटककारों ने एक खास दृष्टि से इतिहास पुराण का उपयोग किया है, इन नाटककारों ने पौराणिक आख्यानों में आधुनिक सम्भावनाओं की खोज प्रस्तुत की है। जो निश्चय ही प्रतीक नाटक के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि है।

§ङ• § अर्थव्यवस्था:-

सम सामयिक युग में मानव जीवन के चारों पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, में "अर्थ" का महत्व पूर्ण स्थान है। बिना आर्थिक आधार के हमारा सामाजिक ढांचा मजबूत नहीं होता। मनुष्य के भौतिक

उत्थान तथा सामाजिक विकास ढाँचा मजबूत नहीं होता । मनुष्य के बौद्धिक उत्थान तथा सामाजिक विकास हेतु आर्थिक समृद्धि अनिवार्य है । स्वतन्त्रता के पूर्व सामान्यतया महाजन, व्यापारी, बड़े कृषक, व जमींदार आदि स्वभावानुरूप, निर्धनों का आर्थिक शोषण निर्दयता पूर्वक करते रहे । समकालीन हिन्दी नाट्यकारों ने अपने नाटकों में ऐसे शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति का चित्रण कर शोषक वर्ग के प्रति घृणा उत्पन्न की तथा आर्थिक परिस्थितियों और उनसे उत्पन्न अन्याय, समस्याओं, का भी चित्रण किया गया । मार्क्सवाद के साम्यवादी चिन्तन के परिणामस्वरूप आधुनिक भारत वर्ष में महाजनी सभ्यता के खिलाफ वर्गभेद जनित आस्थाओं, को प्रतिष्ठा मिली । वर्तमान आर्थिक जीवन व्यवस्था में इसी पद्धति को अपनाकर वर्ग संघर्ष की भूमिका कायम की गयी । हमीदुल्ला ने युद्ध गमन तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अब गरीबी हटाओ, नाटक में युनियन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए वर्ग विषमता को अभिव्यक्ति दी है मणिमधुकर कृत खेला पोलमपुर में साम्यवादी चेतना उभरकर आयी है । जिनमें भड़कते वर्गवाद एवं बदलती मूल्य भंगिमाओं को अभिव्यक्ति मिली है । सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि सोमरू राजा लखीशाह से थोड़ी जमीन मांगने जाता है, राजा उसे अपमानित करके निकलवा देता है । इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप सोमरू जनक्रान्ति का आवाहन कर विद्रोह करके राजा की हत्या कर डालता है । और भूख प्यास से त्रस्त जनता राजमहल पर अपना अधिकार जमा लेती है । 16. इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में आर्थिक द्वन्द्वात्मकता भौतिकवाद पर आधारित वर्गीय कट्टरता का चित्रण करते हुए मणिमधुकर शोषित पीड़ित एवं तिरस्कृत मानवों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं । डा• लाल रक्त कमल पर आधारित नाटक है, जिसमें समाज में फैलने वाले अनाचार, आर्थिक शोषण तथा संकीर्ण स्वार्थवृत्ति को लेकर निम्न मध्यम वर्ग की विवशता–

व्यक्त हुई है । मुद्राराक्षस का नाटक मरजीवा आधुनिक अर्थव्यवस्था के बीच मोहभंग का पहलकरता है । प्रस्तुत नाटक में ऐसे राष्टीय युवक का कहानी चित्रित की गयी है । जो गरीबी को अतिशय यातना के कारण अपनी पत्नी और बच्चे के साथ आत्महत्या की योजना बनाता है । वास्तव में आर्थिक कमी के कारण ही समाज में विघ्नकारी तत्वों को बढ़ावा मिल रहा है ।

﴾च﴿ यातायात:-

सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियों में यातायात का महत्वपूर्ण स्थान है । औद्योगीकरण तथा सामाजिक संघर्ष के लिए यातायात एक महत्वपूर्ण साधन है, यातायात बन्द होने से- न केवल सामाजिक जीवन का विकास, अपितु पूरे देश का विकास बन्द हो सकता है । एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त एक देश से दूसरे देश की संस्कृति आचार, विचार, वेशभूषा, रहन सहन, वैज्ञानिक, विकास आदि का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है । औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप इंग्लैण्ड के उत्पादित माल की बिक्री के लिए अंग्रेजी शासकों ने भारत को उचित और सर्वश्रेष्ठ स्थल समझ देश के कृषि, उद्योग, व्यापार, आदि का केन्द्र बनाया जिसके कारण भारतीय संस्कृति सभ्यता, वेशभूषा, रहन सहन आचार विचार पर पाश्चात्य संस्कृति का पर्याप्त प्रभाव पड़ा । भारतीयों कीआर्थिक स्थिति अति सोचनीय हो गयी, योजनायें तो अनेक बनी, पर बढ़ती हुई जनसंख्या और खाद्यान्नों के अभाव ने देश को एक गहरे संकट में डाल दिया रैलगाड़ियों और बसों में भी यात्रियों के साथ भेदभाव बरता जाने लगा । जिसमें गरीब या सामान्य प्रजा के लिए यात्रा करना असम्भव हो गया ।

----171

सरकारी नियन्त्रण के अभाव के कारण चोर बाजारी, मुनाफाखोरी, वस्तुओं में मिलावट, आदि स्वार्थी तथा देशद्रोही प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला। सरकारी तंत्र में रिश्वत का बोलबाला बढ़ गया। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव आया। पाश्चात्य शिक्षा के कारण पैतृक व्यवसाय से विरक्ति तथा नौकरी के प्रति विशिष्ट आसक्ति ने रोजगार समस्या को जन्म दिया। यातायात के फलस्वरूप प्रचार-प्रसार से युवा पीढ़ी में अपव्ययता तथा कृत्रिमता फैशन परस्ती मे वृद्धि हुई, जिसका असर पारिवारिक बजट पर पड़ा। उत्पादित वस्तु और उसकी बिक्री पर शासन व्यवस्थाको सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ धन राजकोष में जमा ~~करने~~ करने की व्यवस्था सदैव से रही है। जिसे करकी संज्ञा प्रदान की गयी। आंग्ल शासकों की स्वार्थपरता की अर्थपूर्ण नीति के कारण स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी करो में काफी बढ़ोत्तरी हुई, और नये नये कर लगाये गये जिससे करों से बचने के लिए रिश्वत चोर बजारी, का बोलबाला हो गया चोरी के धन से हो रूपया तुम्हें खा गया, नाटक का पात्र मानकचन्द साधारण व्यक्ति से एक सेठ बन जाता है। मिस्टर अभिन्यु से एक सेठ बन जाता है, मि॰ अभिन्यु नाटक के मिल मालिक केजरी लाल ने 13 वर्ष से कई कोई कर नहीं दिया, वह मिनिस्टरों की सिफारिश से काम निकालता रहता है। डा॰ सुरेश चन्द्र शुक्ल का नाटक आकाश झुक गया, नाटक में छात्र बेकार युवक प्रेम में धोखा खायी हुई युवतियाँ नेता, लेखक, व्यापारी, साधु, आदि समाज के सभी वर्ग स्वामी शुभानन्द के चंगुल में फंसे हैं। स्वामी अनैतिक एवं भ्रष्टाचार से युक्त साधनों द्वारा सफलता प्राप्त करने का गुरुमन्त्र देते हैं। 17॰ दया प्रकाश सिन्हा का नाटक "ओह अमेरिका" में इंगलैण्ड से लौटा हुआ श्याम कहता है, हमारे इंगलैण्ड में कोई लड़का अपने बाप का पैर नहीं छूता यह सब कंजर-

वैरिज्म है। आदमी को वक्त के साथ बदलना ही चाहिए। 8. इसप्रकार प्रतीक नाटकों के अध्ययन से यह पता चलता है, कि यातायात का भी पर्याप्त प्रभाव इन नाटकों पर पड़ा है।

§छ§ वैयक्तिकता:-

पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियों में वैयक्तिकता भी एक महत्वपूर्ण कारण है। आज का भारतीय समाज एक विकट सामाजिक मोड़ से गुजर रहा है। परम्परागत सामाजिक मान्यताओं के प्रति नया पीढ़ी मेंअविश्वास के भाव अंकुरित हो रहे हैं। बौद्धिक चेतना के परिणामस्वरूप मध्यवर्गीय समाज और उसके परिणाम मध्यवर्गीय समाज और उसके जीवन में विशेष उथल-पुथल मची हुई है। वर्तमान समाज एक प्रकार से बिखराव और अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है। प्रतीक नाटकों मेंसमाज, परम्परा, स्त्रीपुरुष सम्बन्ध अर्थ एवं संस्कृति के प्रति व्यक्त विचारों में स्पष्ट रूप से नवीनता के दर्शन होते हैं। नवीन युग की अपूर्व उपलब्धि वैज्ञानिकचिन्तन के परिप्रेक्ष्य में विकसित हुए व्यक्तिवाद का प्रभाव इन प्रतीक नाटकों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। व्यक्तिवादियों ने व्यक्ति को लक्ष्य और समाज को निमित्त बनाया। इस चिन्तन धाराक अनुसार समाज को मनुष्य के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिक सहयोग करना चाहिए। सामाजिक संगठन व्यक्ति के द्वारा ही निर्मित होता है, यदि समाज व्यक्ति के उद्देश्य की मूर्ति में अक्षम होता है, तो व्यक्ति को अधिकार है कि वह ऐसे समाज का बहिष्कार करे। व्यक्तिवादकी बिवचारधार के मूल में अहं है। व्यक्ति के अहं की मूल प्रवृत्ति समाज संस्कृति और ईश्वर के प्रति विद्रोह भावना के प्रदर्शन में है। देवयानी का कहना है, नाटक में स्त्री की § बदलती मनःस्थितियों तथा मान्यताओं का वर्णनकिया गया है। देवयानी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व सेक्स के आधार

पर अनेक पुरूषों के सम्पर्क में आती है उसका सिद्धान्त है कि "वन अपल इज नाट एनफ फार द लाइफ, ट्रस्ट मोर" ।9• महानगरीय आवास व्यवस्था ने भी उन्मुक्त यौन प्रवृत्ति और वैयक्तिकता को बढ़ावा दिया है । 20• मोहन राकेश के आधे अधूरे नाटक में इसी वैयक्तिकता के कारण पूरे मध्यमवर्गीय परिवार के टूटने की प्रक्रिया को उजागर करता है । "दुलारी बाई" नाटक में व्यक्ति और समाज की विडम्बना पूर्ण स्थितियाँ तथा जड़ता पूर्ण नर-नारी सम्बन्धों को स्वस्थ मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है । इस प्रकार जीवन को वैयक्तिक समस्यायें और व्यापक राजनैतिक सन्दर्भ एक साथ अभिव्यक्ति पाते हैं ।

﴾ज﴿ यौन चेतना तथा टूटती नैतिकता:-

पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन के क्षेत्र को प्रभावित करने वाली प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में यदि हम प्रतीक नाटकों का विवेचन विश्लेषण करें तो प्रेम और यौन का चित्रण नाटकों में बहुत पैमाने पर हुआ दिखायी देता है । डा• लाल कृत सूर्य मुख नाटक में कुछ ऐसे प्रसंगों की अवतारणा हुई है, जो प्रेम के साथ साथ शारीरिक भोग के स्तर पर यौन-कुंठा और काम सम्बन्धों को कुरेदते हैं । गिरिराज किशोर कृत नरमेद में प्रेम और यौन चेतना के बीच दाम्पत्य जीवन के विघटन की व्यावहारिक व्यंजना हुई है । इसके अतिरिक्त सेक्स के स्तर पर नारी शोषण को आधार बनाकर जिन नाटकों का प्रणयन इस अवधि में हुआ है उनमें मणिमधुकर लिखित दुलारी बाई, दया प्रकाश सिन्हा, का सादर आपका, आदि नाटक हैं, रमेश बक्षी का वामाचार सामाजिक विद्रूपताओं का दस्तावेज है, लेकिन इस कृति

की मूल चेतना और संरचना यौन कुंठा और काम-विसंगतियों से सम्बद्ध ही नहीं, आक्रान्त भी है। कई परिदृश्य कई चित्रकं प्रेम और यौन कथन की सार्थकता में उद्धृत किये गये हैं। रमेश बक्षी की दूसरी नाट्य कृति देवयानी का कहना है, प्रेम की स्वच्छंदता और उन्मुक्त यौन भोग की नाटकीय प्रस्तावना है। इसी प्रकार देवयानी का कहना है, कि नायिका देवयानी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के समक्ष माँ-बाप तथा पिता के महत्व नहीं देती। वह अपने पति साधन से कहती है, "एक टेलीफोन लगवा देना कि मैं अपने सारे दोस्तों से बात करती रह सकूं" 21. देवयानी परम्परागत भारतीय परिवार, दाम्पत्य जीवन तथा पति-पत्नी की मर्यादित जीवन को नकारती है। वह परम्परागत नारी के रूप में उपहास व घृणा की दृष्टि से देखती है। "असल में साधन तुम यहा सब मुझसे चाहते हो अगर मैं साड़ी पहनकर अपने मुन्ने-मुन्नी को उंगली पकड़ कर सिर में मांग भरकर तुम्हारा आफिस से लौटते वक्त दरवाजे में खड़ी हुई दिखूं तो तुम्हारे पुरखे भी प्रसन्न हो जायेंगे। 22. आधुनिक युग की नारी स्वच्छंदता तथा मूल्यहीनता का स्वतन्त्रता का अर्थ मानबैठी है। आज वह हर प्रकार से पुरुष के समकक्ष आने की होड़ में लगी है। दरिन्दे नाटक में रति सती से इस प्रकार अपने मनोभाव प्रकट करती है, "मैं अपनी "नेचुरल अर्ज" पूरी करने के लिए पुरुष का साथ चाहती हूं। बिल्कुल उसी तरह जैसे कोई पुरुष किसी स्त्री का साथ चाहता है। 23 आधुनिक शिक्षा तथा परिवेश ने नारी स्वातन्त्र्य भावनाको नये आयाम दिये हैं। रात रानी की नायिका सुन्दरम से कहती है पढ़ी लिखी लड़कियों का यह सारा विवाह का चक्कर बड़ा ही अपमान जनक है। पति के माने इज्जत मर्यादा नहीं, जो विवाह के बाद कन्या

को वर से मिलती है, बल्कि पति के अर्थ होते हैं मालिक, मालिक माने खुदा नहीं मालिक माने गुलाम वाला मालिक । 24.

एक और अजनबी की शानी स्वतन्त्र विचारों वाली युवती है, चूँकि उसका प्रेमी इन्दर उससे अधिक महत्व अपने कैरियर को देता है । इसलिए वह उसे छोड़कर अन्य से विवाह कर लेती है । और-विवाहोपरान्त वह अपने पति को भी आदर नहीं दे पाती, क्योंकि वह कमजोर आत्मविश्वास हीन, चापलूस व्यक्ति है, जो पदोन्नति के लिए पत्नी को साधन बनाता है । आत्म सम्मान से आहत शानी का क्रोध फूट पड़ता है । "अगर मैं कहूं मुझे पूरी जिन्दगी से नफरत है, मैं नहीं चाहती यह गरम साँसों से भरे कमरे में बन्द जिन्दगी, सिफारिशों से पाइ होनहारी और सिफारिशों के बल पर होती तरक्की 31. ओह-अमेरिका नाटक में नाटककार ने व्यंग्य के माध्यम से इस समस्या को चित्रित किया है, श्याम लाल जो स्वयं पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर भारतीयता को तुच्छ समझता था, परन्तु उसकी सन्तान उससे भी दो कदम आगे बढ़कर घर की मान मर्यादा व इज्जत को ताक में रखकर - नशीली वस्तुओं का सेवन कर स्वच्छंद यौनाचार करती है । समीर अपने पिता श्याम से कहता है, कि "मॉड सोसायटी परीमिसिव सोसायटी होती है वहाँ सैक्स पर कोई बन्धन नहीं होता 26. इस प्रकार - पाश्चात्य के अन्धानुकरण ने स्वच्छंद यौन प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है इन नाटकों के अतिरिक्त तिलचट्टा तेंदुआ, कर्फ्यू, सेतुबन्ध, आदि अन्य नाटकों में भी स्त्री-पुरुष के बीच उन्मुक्त यौन चेतना का खुलकर वर्णन किया गया है । इन नाटकों में व्यक्ति की कामजनित कुंठाओं यौन पीड़ित मनः स्थितियों आदि का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया

-176

गया है । आधुनिक परिवेश में स्वच्छंद यौन प्रवृत्ति के कारण पति पत्नी प्रेमी-प्रेमिका, तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच उत्पन्न विघटन, अलगाव, तनाव तथा अन्य अनेक स्थितियों का चित्रण किया गया है । डा॰ लाल का नाटक कजरीवन की नायिका कजरी ऊँची जाति वालों का पर्दाफाश करती हुई कहती है " गाँव वाले लोगों को बताते यह नीची जाति की है, अछूत है, जो ऐसा कहते है वे ही चुपचाप मेरे हाथ की चाय पी जाते । एक दिन शाम को इसका मर्द इसका बेटा, इसका पति----सबने मुझे घेर लिया। 27. इसी प्रकार निम्न वर्ग की शेफाली भी उच्च वर्ग के बकुल से शारीरिक सम्बन्ध बनाये रखती है ।

28. आधुनिक भ्रष्ट राजनीतिक परिवेश से कुंठित स्वार्थी मनोवृत्ति से विकृत स्वच्छंद यौन चेतना को प्राधान्य दिया गया है "मरजीवा" सुनो शेफाली, दरिन्दे, आदि नाटक इसी तथ्य की पुष्टि करने में समर्थ है । "मरजीवा" नाटक में शिवराज गुजे मिनिस्टर बेरोजगार तथा आर्थिक रूप से दुःखी भूमि को नौकरी का लालच देकर उसका शरीर खरीदना -चाहता है इस प्रकार राजनीतिक हथकण्डों में प्रश्रय ले रही इस यौन चेतना ने समाज को और अधिक खोखला साबीत किया है पश्चिमी सभ्यता के रंग में चढा हुआ युवावर्ग भारतीय संस्कृति को पिछड़े हुए वर्ग का लक्षण मान रहा है ।

आज का विश्लेषण वादी साहित्यकार टूटती नैतिकता तथा खण्डित धार्मिकता का चित्रण कर रहा है । समाज की सही तस्वीर प्रस्तुत कर रहा है । समाज की उत्तर उर्वशी कुत्ते, देवयानी का कहना है सादर आपका, वाह रे इन्सान, दरिन्दे, ओह अमेरिका, तेंदुआ, -

वामाचार, तीसरा हाथी, करफ्यू, व्यक्तिगत, चिराग की लौ, कुहासा और किरण, द्रौपदी, आधे-अधूरे, आदि कई नाटकों में पाश्चात्य चिंतन अति बौद्धिकता तथा आर्थिक विषमता, के धरातल पर आधारित वैयक्तिक चेतना से प्रभावित खण्डित-मण्डित होती नैतिक व धार्मिक मान्यताओं को उद्घाटित किया गया है ।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार और बौद्धिकता के आलोक से दीप्त इन नाटकों ने नैतिकता तथा धर्म के प्रति नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया । जिसके परिप्रेक्ष्य में पाप-पुण्य की व्याख्या बदल रही है । पीली दोपहर में डा॰ सुधांशु अपनी पत्नी को समझाते हुए कहता है "पूर्व जन्म के पाप, पाप, पाप क्या होता है । सब फिजूल की बातें है । 20॰ आज का मनुष्य आधुनिक बुद्धि व तर्क के आधार पर ईश्वर व उसकी सत्ता को काल्पनिक मान रहा है । " न धर्म नईमान" में दिनेश ईश्वर को मनुष्य से भी गौण मानता है, " हाँ क्योंकि मैं भगवान के दोषों को इन्सान के सिर नहीं मढ़ता, और इन्सान की खूबियों का ताज उठाकर भगवान के सिर नहीं रखता । राम दयाल जी अव्वल तो भगवान है, नहीं, और अगर है, तो हमारी तमाम मजबूरियों और बदनसीबियों का जिम्मेदार है । इसलिए उसके आसरे न रहिये 30॰ इसी प्रकार राजेन्द्र शर्मा के नाटक काया कल्प में समाज के ठेकेदार धर्माचार्यों पण्डितों आदि आडम्बरों का षड्यन्त्रों के प्रति विद्रोह को अभिव्यक्त किया गया है । "कबिरा खड़ा बजार में" प्राचीन काल से चले आ रहे वाह्याडम्बरों और अन्धविश्वासों का पर्दाफाश किया गया है, नैतिक व धार्मिक मूल्यों के इस पक्ष को "अर्थ" तथा "काम" पर आधारित भौतिकवादी चेतना ने सर्वाधिक प्रभावित किया है । "चिराग की लौ" के तारा, रानी, जयन्त, और गिरीश

जैसे ऐसे पात्र हैं, तो अर्थ तथा भौतिकता के समक्ष आदर्श व नैतिकता को नकारते हैं। गिरीश जो कमीशन ऐजेन्ट है वह धन की थैलियों में सरकारी अफसरों को खरीदता है। वह ईमानदारी को एक रोग की संज्ञा देता है। अतः "किम्" नाटक में तस्कर नरेन अर्थ के आधार पर देशप्रेम, आदर्श, संस्कार, ईमानदारी, प्रेम आदि के आचार विचारों को झुठलाता है। उत्तर उर्वशी की मोना पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित स्वतन्त्र विचारों की युवती है। वह प्रकाशक की पत्नी है। लेकिन लेखक को देखकर उसके प्रति वासनात्मक विचार रखती है। "खजुराहो" का "शिल्पी" नाटक की नायिका राजकुमारी अलका स्वतन्त्र व्यक्तित्व व विचारों की पोषक है, वह शिल्पी से प्यार करती है, और उसे पाने के लिए समाज उसकी मर्यादा तथा बंधनों को तोड़ने केलिए तत्पर रहती है। "आधे-अधूरे नाटक में चित्रित परिवार को छिन्न भिन्न करने में जितना हाथ आर्थिक संकट का है, उतना हा-वैयक्तिक स्वतन्त्रता का भी। सावित्री पति से असन्तुष्ट होकर कई पुरुषों से सम्पर्क स्थापित करती है। उसकी पुत्री बिन्नी अपने माँ के प्रेमी के साथ भाग जाती है। "लहरों के राजहंस" की सुन्दरी अत्यधिक आत्मविश्वास तथा व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य का भावना से सम्पन्न है। वह अपने रूपाकर्षण में नन्द को उलझाये रखना चाहती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है, कि नारी स्वतन्त्रता की भावना ने पारिवारिक दायित्वों, परस्पर प्रेम भाव, परोपकार, सदभावना जैसे मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिये हैं। साथ हो साथ नैतिक सम्बन्धों को विघटन के कगार पर लाकर खड़ा किया है। आज नारी समिति घर की चारदीवारी निकलकर विस्तृत क्षेत्र में निकल आयी है।

(झ) मूल्य संक्रमण=

समकालीन प्रतीक नाटकों में मानव संवेदनाओं की प्रखर-

अभिव्यक्ति हुई है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात मानवजीवन के विविध क्षेत्रों में परिवर्तन की एक लहर सी दौड़ गयी, समकालीन नाटकों में इन परिवर्तित सन्दर्भों और विघटित मानव मूल्यों का विवेचन सहजता से किया जा सकता है । मानव मूल्यों के विघटन के फलस्वरूप वैयक्तिक, बौद्धिक, एवं नैतिक मूल्यों को परखने के नये पैमाने बनाये गये । जिसका अनुशीलन राष्ट्रीय जिन्दगी में संकीर्णता, क्षुद्रता, एवं दिशाहीनता, को मद्दे नजर रखते हुए किया जाने लगा । आज न केवल समाज का अपितु हमारे परिवार का हर पहलू सम्बन्धों के बिना इसी मूल्य हीनता का जीवन जी रहा है । आज उसके बीच दया, सहिष्णुता, श्रद्धा, प्रेम, भाईचारा, आदर आदि कुछ भी नहीं है । वैयक्तिक स्वतन्त्रता पीढ़ी संघर्ष, नारी जागरण, एवं यौन सम्बन्धों की अकुलाहट, ने आदर्शों और मानव मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिये हैं । आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के तथा पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के कारण मानव मूल्यों में विघटन का आना स्वाभाविक ही है । प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में रीति रिवाजों धार्मिक कृत्यों, व्रत, तीर्थ, देवी, देवता, की मान्यता, मोक्षादि की कामना विवाह सम्बन्धी रीति रिवाज, जन्म से मृत्यु पर्यन्त संस्कार, गंगा स्नान शिष्टाचार, तथा लोकाचार, का महत्व रहा है । आज भी कुछ सामाजिक एवं धार्मिक रीतिरिवाजों का उतना ही महत्व है जितना पहले था । भारतीय समाज में लोकाचार जैसे कि विवाह आदि शुभ कार्यों पर मुहूर्त देखना, देवी देवता का पूजन, जन्म मृत्यु पर भोजादि देना, नाम जनेऊ, कनछेदा, मुण्डन आदि संस्कार तीर्थयात्रा, गंगा स्नान, विवाह, आदि अवसर पर गीत गाना, शिष्टाचार, नमस्कार, बूढ़ों का आदर, पैरछूना

उपहार देना, आज्ञा पालन, बड़ों के सामने ऊँचे आसन पर न बैठना आदि मान्य थे। और समाज के सभी वर्ण इसका पालन करते थे। परन्तु आज इनका महत्व बिल्कुल घट गया है, आज आज्ञा पालन, शील, पवित्रता, मातृत्व, पातिव्रत्य, आदि पर प्रश्नचिन्ह लग गया है।

आधुनिक युग के आर्थिक संकट में व्यक्ति इस तथ्य को पहचान गया है, कि अब विवाहादि आदि के अवसर पर बाहरी दिखावे के स्थान पर सादगी बर्तनी चाहिए।

प्रकाश अपने ग्रामीण साथी दुर्गा को कहता है, "असल में दुर्गा शादी ब्याह, क्रिया कर्म, छठी, तेरहवी, इन सब चीजों में बहने वाले रूपयों को हमें रोकना है 31. विज्ञान व शिक्षा ने आज के व्यक्ति को तार्किक बना दिया है। न धर्म न इमान नाटक में दिनेश नामक पात्र के माध्यम से हिन्दू धर्म के विवाह सम्बन्धी लोक विश्वासों को निरर्थक घोषित किया है। हिन्दू धर्म में एक ही गोत्र तथा कुछ सम्बन्धों में रिश्ता नहीं हो सकता। किन्तु दिनेश इस सामाजिक मान्यता को नकारता हुआ कहता है, "मुसलमानों में यह रिवाज है, अंग्रेजों में रिवाज है, उनकी नस्ल कमजोर हुई है, 32. इसी प्रकार "वाह रे इन्सान" का कान्ति वौद्धिकता के परिवेश में बदलते रीति-रिवाजों की ओर इंगित करते हुए कहता है कि "सम्पत्त पत्नी थी, शादी की थी तुमने? मंगल सूत्र पहनाया था उसको ?

क्रान्ति तुम्हारा मतलब है, कि बिना मंगल सूत्र पहनाये शादी नहीं होती क्या ? 33. शिक्षा का प्रभाव अन्ध विश्वासों को प्रभावित करता जा रहा है। उसके आलोक में पापपुण्य भाग्यवाद आदि की भावना अपना अस्तित्व त्यागती जा रही है। प्रो. सुधांशु कहता है, पूर्वजन्म के पाप। पाप-वाप क्या होता है ? सब फिजूल की बातें हैं। हम अपना भाग्य अपने हाथों ही बनाते हैं।

34. इसी प्रकार चारपाई नाटक में महानगरीय आवास समस्या से खोखले होते हुए संयुक्त परिवार को यथातथ्य उजागर किया है । छोटे से घर में पति-पत्नी बच्चे व माता पिता ठसे हुए हैं । और परिस्थितियों तथा शहरी समस्याओं ने पारिवारिक मर्यादाओं कोमल रिश्तों तथा आचरणों को मैला कर दिया है । माँ कुंठित होकर पुत्र और पुत्रवधू को संकेत करती है, "लेट है तो आने-जाने की जगह भी नहीं छोड़ते शर्म, हया, धोकर पी गये हैं । 35. अन्यत्र बूढ़ा संयुक्त परिवार को पुराने पेड़ की उपमा देते हुए कहता है :-

"सारी गड़बड़ उस पेड़ के कारण हुई । कैसे कट गया वो पेड़ ? पुराना हो गया होगा गिर गया होगा ? मैं तो उसी की पहचान पर घर में घुस गया । लगा अपना ही घर है । 36. इस प्रकार वृद्ध के द्वारा संयुक्त परिवार की टूटन, गिरती जीर्ण शीर्ण परम्परा का उद्घाटन किया गया है । पीली दोपहर, नाटक में रमादेवी, वधू रोशा को धार्मिक आडम्बरों को मानने का आग्रह करता है ।

"यह माने तब ना" उस सुधा का भी दिमाग चला गया है । वह तो खैर पढ़ लिखकर साहब हो गया है, पर आखिर यह तो औरत जात है, 37. इसे तो अपने धर्म, पूजा, व्रत, त्यौहार, मानने चाहिए । पूर्णविराम नाटकों में बाह्य रूप से संयुक्त किन्तु भीतर से खोखले परिवार को प्रस्तुत किया गया है । भरे पूरे घर में केवल मात्र नौकर नन्दू ही घर के बुजुर्ग मुखिया चन्द्रप्रकाश की देखभाल करता है । बाकी सभी तीन पुत्र और दो पुत्र वधुयें अपनी अपनी दौड़ में भाग रहे हैं । पूरा घर केवल नौकर के सहारे चल रहा है । "बाबू जी आखिर आपकी शिकायत क्या है, कौन सी व्यवस्था अधूरी है, इस घर में सब काम देखने के लिए नौकर हैं । " क्या आप चाहते हैं, कि सब आपके सिरहाने बैठा रहा करे ।

38. आधुनिक युग के परिवारों के विघटन की समस्या नारी की आत्म निर्भरता, आर्थिक विषमता, सेक्स तथा राजनीति की उपज है । आधुनिक परिवेश में संक्रमण की स्थिति से न केवल महानगरीय परिवार प्रभावित हो रहे हैं, अपितु कस्बे और गाँव के परिवार भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं । अपने अस्तित्व को खोजता हुआ व्यक्ति नगरीय भीड़ और व्यस्तता में खोता जा रहा है । पति-पत्नी, भाई बहन, पुत्र-पुत्री, जीवन की अन्धी दौड़ में एक दूसरे से कटते जा रहे हैं । उनमें परस्पर त्याग आस्था, विश्वास के स्थान पर शंका स्वार्थ, और कटुता भी पनपने लगी है । जिन्होंने दाम्पत्य जीवन की नींव को हिलाकर परिवार में दरार डाल दी है ।

इस प्रकार के नाटकों में लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, रातरानी, करफ्यू, व्यक्तिगत, सगुन पंछी, देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी द्रौपदी, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, बिना दीवारों के घर, छलावा, मोहिनी, नरमेद, चारयारों की यार, वर्फ कीमीनार, नींव की दरारें, रूपया तुम्हें खा गया, वसीयत, त्यार, आदि प्रमुख नाटक है जिनमें सम्बन्धों की हीनता और खोखलेपन को उजागर किया किया है ।

स्वातन्त्र्योत्तर युगीन परिस्थितियों से विकसित होने स्व अस्तित्व व स्वाभिमान, के बोध में, पारिवारिक सम्बन्धों में नई दिशायें, नये विचार, एवं नये दृष्टिकोण, उद्भूत हुए हैं । "बिना दीवारों के घर की नायिका शोभा, स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपने मातृत्व व पत्नीत्व का गला घोंट देती है किन्तु घुट-घुटकर पति के साथ रहना स्वीकार नहीं करती । इसी नाटक में मीना अपने पति जयंत से तलाक लेकर समाज सेवा की ओर उन्मुख होती है ।

आधुनिक युग में मनोवैज्ञानिकता पर आधारित फ्रायड वादी चिन्तन ने स्त्री-पुरूष के आदर्शपूर्ण सम्बन्धों पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए नाटककार को अत्याधुनिक अनुभूतियों की पहचान करायी है। इसलिए समकालीन नाटककार ऐसे परिवारों का चित्रण करते हैं, जहाँ न पति देवता है और न पत्नी दासी, दोनों के सम्बन्ध यथार्थ की कठोर भूमि पर केवल मात्र यौन तृप्ति तक ही सिमट आये हैं। यही कारण है, कि मूल्यों व आदर्शों से युक्त दाम्पत्य बंधन सहज होते जा रहे हैं। गिरिराज किशोर कृत नरमेध में काम कुंठित नारी की मनोदशा का वर्णन किया गया है। सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में नपुंसक पति से यौन तुष्टि न मिलने पर शीलवती का विद्रोह इन शब्दों में टूट पड़ा है। "कितनी युवतियां है, जो विवाह से पहले ही कुंवारी नहीं रहती" --------- और मैं ब्याहता होकर भी ब्रम्हचारिणी थी, लेकिन कब तक ? ----- मैं एक मामूली स्त्री हूं जब शरीर के माध्यम से जीती हूं तो शरीर की मांगें कैसे नकार सकती हूं। मुद्राराक्षस कृत तिलचट्टा रमेशबक्षी कृत वामाचार सुदर्शन चोपड़ा कृत अलग पहचान, तथा सुरेश सिन्हा कृत सादर आपका आदि नाटकों में स्वच्छन्द यौन वृत्ति के प्रति बदलते दृष्टिकोण के कारण टूटते परिवारों बदलते मूल्यों का चित्रण किया गया है।

आधुनिक वातावरण की जटिलताओं ने विसंगतियों ने पारिवारिक जीवन को विघटनकारी बना दिया है माता पिता के आपसी तनाव व कलह का सन्तान पर भी बुरा असर पड़ रहा है। इसलिए सन्तान उनकी उपेक्षा कर रही है देवयानी का कहना है, कि नायिका देवयानी साधन के साथ चुपचाप विवाह कर लेती है, जब उसका पिता लेने आता है तो वह कहती है "देवयानी "हंस देता है हल्के से" बात यह है कि अगर कोई परेशानहै, तो साधन है या मैं हूं। मां इसलिए परेशान नहीं है, कि

भी नेवर लब्ड भ। इसलिए परेशान नहीं ह, कि आपको इस दिन की कल्पना थी । ------

40. इसी प्रथा के टूटने का चित्रण नरमेध नाटक में किया गया है ।

"इन्द्रराव" ---गौरा जी कभी कभी बहुत थकान लगती है, घर का हर व्यक्ति सिमटकर इकाई बन गया है । घोंघे की तरह डरा हुआ खामोश डा. लाल कृत व्यक्तिगत नाटक में मैं और वह पात्रों के माध्यम से पति-पत्नी के मनोवैज्ञानिक दबाव, कलह तथा रिक्तता को उदघाटित किया है । वह पूरे मन से कहता है, कि "पत्नी की स्विच पति के हाथ में वह जो मूड चाहे बटन दबा दे, --------सबकुछ यहाँ तुम्हारी इच्छा ह । तुम्हारा ही स्वार्थ है, तुम कब क्या कर डालो । कब किस वक्त मुझसे क्या मांग बैठो । किस वक्तमुझे क्या बन जाना पड़े 42. मोहन राकेश कृत आधे-अधूरे मे पारिवारिक विघटन को बड़ी बखूबी से उदघाटित किया गया है, सावित्री का आत्म निर्भरता तथा पति की बेकारी ने पति पत्नी के बीच तनाव युक्त स्थितिको पैदा किया है । बड़ी बेटी बिन्नी अपनी मां क प्रेमी केसथ भाग जाती है । लड़का अशोक बेरोजगार तथा विक्षिप्त है बेऊ= जो अश्लील पुस्तकों और फिल्मी पत्रिकाओं में लगा रहता है । छोटा लड़की बिन्नी जिद्दी मुहफट तथा भाई की तरह यौन कुंठित है । इस परिवार के सदस्य एक दूसरे के लिए अजनबी है । उसके भावनात्मक सम्बन्ध जड़ हो चुके हैं, आज की युवापीढ़ी पहले की तरह आंख बन्द कर माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करती । अपितु बौद्धिक स्तर पर स्वतन्त्रता की अपेक्षा रखते हुए परिवार में रहती है ।

तीसरा हाथी में युवा पीढ़ी का प्रतीक ह, विभा कहती है "अमित" एक अहसास मुझे रह रहकर होता है, कि मैं जैसे तुम नहीं पा

रही हूं। (सामने आकर) लगातार जो पौधे छाँह में रहते हैं, और जिन्हें सूरज की धूप नहीं मिलती उनकी बाढ़ रुक जाती है। पत्ते पीले हो जाते हैं। रंग सांवला हो जाता है। 43. सादर आपका नाटक में रेखा अपनी माँ के व्यवहार से दुखी होकर घर को जेल की संज्ञा देते हुए उससे बाहर निकल खुले में साँस लेने की इच्छुक है। पाश्चात्य के अन्धानुकरण तथा अति बौद्धिकता ने भी पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित किया है। समकालीन युग में युवा वर्ग परिवार के बुजुर्ग सदस्यों के प्रति अवज्ञा व तिरस्कार को "आधुनिकता का मापदन्ड मान रहा है" ओहअमेरिका नाटक में नाटककार ने दया प्रकाश सिन्हा ने श्याम के माध्यम से इसी तथ्य को उजागर किया है। श्याम दो वर्ष विलायत रहकर लौटता तो अपने पिता व देश के प्रति तुच्छ विचार बना लेता है। वह अपने पिता से कहता है, "पोप "यानि ओल्डमैन) अपना बुड्ढा मतलब बाबू जी-----

44. विनोद रस्तोगी कृत वक्त की दीवार में परिवर्तित होते हुए भाई बहन के रिश्ते को चित्रित किया गया है। सुरेन्द्र वर्मा कृत द्रौपदी में भाई-बहन सम्बन्ध की गरिमा पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं।

अनिल जरा इसका पर्स खोलकर देखो, रिट्ज के बाक्स की दो टिकटें हैं, दोपहर के शो की, वही है इसकी किलास, सोसियोलोजी नहीं सैक्सोलोजी 45. सुरेश (डाटकर) अनिल इतना और पूँछ लो आज थ्योरी होगी या प्रैक्टिकल। बसन्त कुमार परिहार कृत नाटक पूर्ण विराम में भाईयों के परस्पर सम्बन्ध केवल एक बाप के होने तक सीमित हैं, एक दूसरे से बात करने का अवकाश उन्हें नहीं मिलता। रामबाबू अपने अपाहिज भाई गिरधारी को बोझ समझता है, "अब अब मैं सबको अपने सिर पर उठाकर तो घूम नहीं सकता" 46. इस प्रकार आर्थिक आपाधापी एवं युक्त तनाव परिस्थितियों ने संकुचित होती पारिवारिक स्थितियों ने भाई बहन और भाई भाईयों के मधुर सम्बन्धों पर तुषाराघात किया है।

अतः किमु नाटक का नायक अपनी भाभी रत्ना से कहता है, "बेईमानी झूँठ धोखेबाजी, खराब चीजे नही है। अगर तो उनसे ज्यादा बुरी चीजे है। सच्चाई और ईमानदारी ये जिन्दगी के बहाव को रोकती है, पकड़कर बाँधती है। 47. घरौंदा में सुदीप अपनी प्रेमिका छाया को मृत्यु का इन्तजार कर रहे मिल मालिक मोदी के साथ विवाह करने को बाध्य करता है सुदीप छाया से कहता है "भावना को ताक पर रखकर संस्कारों का बोझ उतारकर और नैतिकता के माथे पर लात मारकर हर काम सावधानी से करना है। 48. पारपाइ नाटक में इसी समस्या से संघर्षरत, थकित परिवार का चित्रण किया गया है, जिसमें पारिवारिक स्नेह भाव का वृक्ष सूखकर ठूंठ बन गया है, और पारिवारिक मूल्य नाटक में उपस्थित गन्दे कपड़े के गट्ठर के समान रह गये हैं।

मुद्राराक्षस के मरजीवा नाटक में भ्रष्ट राजनीति में लिप्त शिवमालगजे विरोधी दल को बदनाम करने के उद्देश्य से आदर्श को जिंदा जलवा देते है इसी प्रकार " राम का लड़ाई में कुछ भ्रष्ट नेता विमला की हत्या कर देते हैं। इस प्रकार भ्रष्ट राजनीतिक दाँव पेंच से प्रेम, त्याग, सौहार्द, परोपकार, देश सेवा, व कर्त्तव्य भावना जैसे नैतिक मूल्य दम तोड़ रहे हैं। दरिन्दे, मि. अभिमन्यु एक कुत्ता। गधा उर्फ अलादाद खाँ सम्भवामि युगे युगे शुतुर्मुर्ग सिंहासन खाली है, बकरी आदि नाटकों में परिवेशगत राजनैतिक परिस्थितियों से विकसित होती स्वार्थपूर्ण सत्ता में लिप्त वैयक्तिक चेतना ने धार्मिक व नैतिक मूल्यों को छत विक्षत कर दिया है इसलिए समकालीन व्यक्ति कह उठा है, " धर्म आडम्बर रूढ़ि, अवतारवाद, ढकोसला, पोगापंथी, जड़वाद 49. आज उसकी ईश्वर के प्रति आस्था बिखर रही है वह समस्त बुराईयों की जड़ ईश्वर को मान रहा है।

अतः स्पष्ट हो जाता है कि सम सामयिक नाटक आर्थिक वैज्ञानिक राजनैतिक परिस्थितियों को धरातल पर संकीर्ण होती वैयक्तिक चेतना से खण्ड खण्ड होते हुए बिखरते धार्मिक नैतिक मूल्यों की सही तस्वीर पेश कर रहे हैं।

सन्दर्भ सूची

पंचम परिच्छेद

1. भरत नाट्यशास्त्र : पृष्ट 108: 109
2. इनर एण्ड मिरिल:सोशल डिस आर्गनाइजेशन पृष्ट 22
3. विना दीवारों का घर पृष्ट 45
4. देवयानी का कहना है, रमेश वक्षी, पृष्ट16
5. कजरी वन- डा॰ लाल पृष्ट 61
6. दरिन्दे , हमीदुल्लाह पृष्ट 33
7. वाह रे इन्सान, रमेश मेहता पृष्ट23
8. तीसरा हाथी,रमेश वक्षी पृष्ट 41
9. सदर सादर आपका, दया प्रकाश सिन्हा पृष्ट74
10. अपनी पहचान, सुदर्शन चोपड़ा पृष्ट 43
11. देवयानी का कहना है, रमेश वक्षी पृष्ट 24
12. सुनायोफाली डा॰ कुसुमकुमार पृष्ट 57
13. सादर आपका, दया प्रकाश सिन्हा, पृष्ट 20
14. टगर, विष्णु प्रभाकर पृष्ट 71
16. मणिमधुकर : खेलापोलमपुर पृष्ट65
17. मि॰ अभिमन्यु: डा॰ लाल पृष्ट 15
18. ओह अमेरिका: दया प्रकाश सिन्हा पृष्ट 81
19. देवयानी का कहना है, रमेश सक्षी पृष्ट 72
20. घरौंदा: शंकर शेष, पृष्ट 18
21. देवयानी का कहना है, रमेश वक्षा पृष्ट 20
22. " " पृष्ट 20
23. दरिन्दें, हमीदुल्लाह पृष्ट 33
24. राततरानी, डा॰ लाल, पृष्ट 38

25. एक और अजनबी : मृदुलागर्ग नारंग पृष्ठ अंक-11,

26. ओहअमेरिका: दया प्रकाश सिन्हा पृष्ठ 56

27. कजरी वन डा. लाल पृष्ठ 41

28. सुनो सेफाली: डा0 कुसुम कुमार पृष्ठ 59

29. पीली दोपहर, जगदीश चतुर्वेदी पृष्ठ10

30. न धर्म न ईमान, रेवती सरन शर्मा, पृष्ठ 50

31. माटी जाग रे, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृष्ठ 68

32. न धर्म न ईमान, रेवती सरन शर्मा पृष्ठ 15

33. वाह रे इन्सान, रेवती सरन शर्मा पृष्ठ 33

34. पीली दोपहर, जगदीशचतुर्वेदी पृष्ठ 10

35. नारंग अंक- 11

36. वही पृष्ठ-##8 11

37. पीली दोपहर, जगदीश चतुर्वेदी पृष्ठ14

38. पूर्णविराम, वसन्तकुमार परिहार पृष्ठ 62

39. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सुरेन्द्र वर्मा पृष्ठ54

40. देवयानी का कहना है, रमेश बक्षी, पृष्ठ 29

41. नारंग अंक संयुक्तांक 15-16, पृष्ठ 21

42. व्यक्तिगत, डा. लाल पृष्ठ 40

43. तीसरा हाथी, रमेश बक्षी पृष्ठ 75

44. ओह अमेरिका, दया प्रकाश सिन्हा पृष्ठ 72

45. द्रौपदी, सुरेन्द्र वर्मा, नारंग अंक-14 पृष्ठ 10

46. पूर्ण विराम, वसन्त कुमार, परिहार, पृष्ठ62

47. अतः किम् राधाकृष्ण सहाय, पृष्ठ 36

48. घरौंदा, डा. शंकर शेष पृष्ठ 57

49. उत्तर उर्वशी, हमीदुल्लाह पृष्ठ 26